Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

जून 2023 (द्वितीय)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ एवं समस्त आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और इस दौरान उन्होंने कहा कि पूरे विश्व की कल्याण की भावना के साथ आओ फिर से वेदों की ओर लौट चलें और महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दिए गए सिद्धान्तों को जीवन में आत्मसात् कर खुशहाल समाज एवं सशक्त देश का निर्माण करें।

आर्यसमाज लूखी जिला रेवाड़ी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने शिरकत की। इस दौरान आर्यसमाज लूखी के प्रतिनिधियों ने प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया।

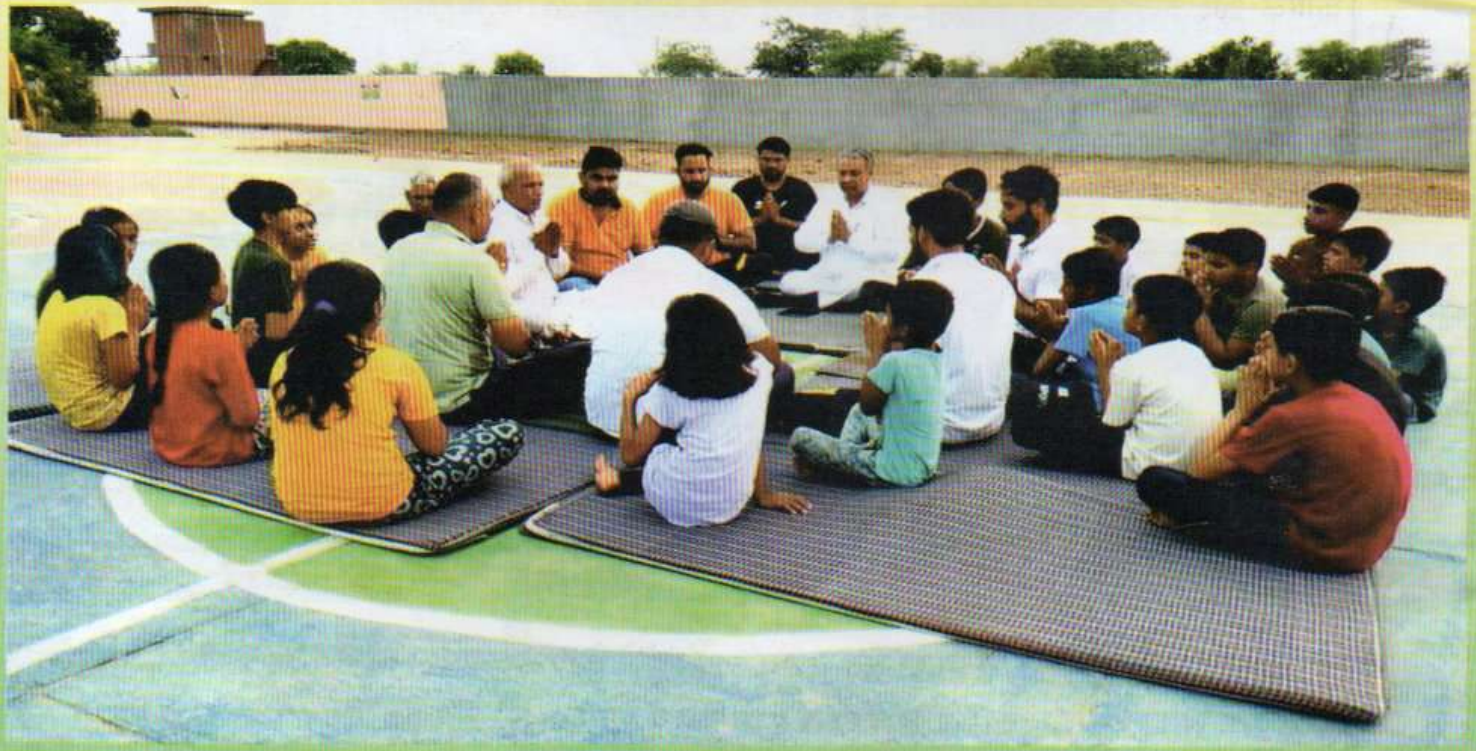

आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य के द्वारा मास्टर टेकचंद मैमोरियल स्कूल, हरसोला में आर्य वीर दल शिविर क शुभारम्भ हवन द्वारा विधिवत् रूप से किया गया। प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि वर्तमान में अधिक से अधिक युवाओं को आर्य वीर दल शिविर से जुड़कर सिर्फ शारीरिक शिक्षा ही नहीं, अपितु वैदिक और संस्कारों की शिक्षा भी लेने की जरूरत है ताकि अच्छे समाज और सशक्त देश का निर्माण संभव हो सके। इस अवसर पर कॉलेजियम सदस्य श्री सुनील ढुल, श्री सुरें नरवाल व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 10

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जून, 2023 (द्वितीय)
16 से 30 जून, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. वैदिक संस्कृति व संस्कारों को आज के युग में बचाने की प्रमुख चुनौती 4
4. लवजेहाद, कश्मीर व केरल स्टोरी 6
5. गीता ही नहीं वेदों का भी प्रचार करो! धर्मगुरु विचार करें.... 7
6. क्या महाभारत में मन्त्र हैं? 8
7. मानव जीवन मिलना ईश्वर की हम पर सबसे बड़ी कृपा 10
8. महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत समाज-सुधार के विविध सोपान 12
9. स्वयं अपने बच्चों के दुश्मन न बनें 14
10. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन-उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

वेदमन्त्र

यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।
अचित्ती यत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः॥

-ऋग्वेद मंडल 7, सूक्त 89, मन्त्र 6

अन्वय-हे वरुण देव! (वयम्) मनुष्याः दैव्ये जने यत् किम् च इदम् अभिद्रोहम् चरामसि, यत् तव धर्म अचित्ती (अचित्या) युयोपिम, तस्मात् एनसः न मा रीरिषः।

अर्थ-(वरुण देव) हे जीवों के कर्मफल की व्यवस्था करने वाले वरुणदेव, परमेश्वर! (वयम् मनुष्याः) हम संसार के साधारण मनुष्य (दैव्ये जने) विद्वान् तथा धर्मात्माजनों के प्रति (यत् किम् च इदम् अभिद्रोहम्) जो कुछ थोड़ा-सा भी विरोध या द्रोह (चरामसि) करें, (अचित्ती=अचित्या) वह सब बिना समझे ही (तव धर्म=धर्मान्) आपकी अवस्थाओं का (युयोपिम) विरोध हमसे हो जाता है। (तस्मात् एनसः) उस पाप से (नः) हम लोगों को (मा रीरिषः) हानि न पहुँचाइए।

व्याख्या-वेद में परमात्मा को बहुत-से नामों से संबोधित किया गया है। नाम रखने में तीन बातों का ध्यान रहना चाहिए-नाम रखने वाला अर्थात् वह जो पुकारे, दूसरा जिसको पुकारा जाए अर्थात् नामी, तीसरा 'नाम' अर्थात् वह शब्द जिसके द्वारा पुकारा जाए। जब हम परमात्मा को पुकारते हैं तो उसके लिए किसी एक शब्द का प्रयोग करते हैं। हम परमात्मा को क्यों पुकारते हैं? किसी अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए। याज्ञवल्क्य ने इसी अभिप्राय से मैत्रेयी से कहा था-

"न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति, आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति....न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवन्ति, आत्मनस्तु कामाय देवा प्रिया भवन्ति....न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति, आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति" इत्यादि।

द्रष्टव्य बृह० उपनिषत् 2.4.5

अर्थात् जब कोई किसी को प्यार करता है तो अपने लिए करता है दूसरों के लिए नहीं। चाहे पति हो, पत्नी हो, पुत्र हो, वेद हो, ईश्वर हो या कोई और चीज हो। इसलिए

जब हम ईश्वर को याद करते हैं तो अपने लिए, न कि ईश्वर के लिए। इसलिए नाम लेने वाला 'नाम' के द्वारा अपनी कमी की सूचना देता है। बीमार अपनी बीमारी की दृष्टि में रखकर वैद्य को वैद्य कहकर पुकारता है। अर्थात् 'वैद्य' नाम इस बात का सूचक है कि वैद्य नाम का प्रयोग करने वाला स्वयं कोई इच्छा रखता है। इसी प्रकार वैद्य का नाम उसका है जिसमें पुकारने वाले की उस कमी को पूरा करने का सामर्थ्य हो, सम्भव है कि वैद्य में और भी बीसियों गुण हों। हो सकता है वह अच्छा गायक भी हो, कवि भी हो, धनाढ्य भी हो, पर बीमार को वैद्य के अन्य बीसियों गुणों से प्रयोजन नहीं, अतः सिद्ध हुआ कि 'नाम' वह शब्द है जो पुकारने वाले की कमी (त्रुटि) और जिसको पुकारा जाए उसमें उस त्रुटि को दूर करने का सामर्थ्य जताता है। जब वेद ने कहा, **"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"** (ऋग्वेद 1.164.46) तो इसका तात्पर्य यह है कि प्रभु में बहुत से गुण हैं। विद्वान् लोग दो बातों की अनुभूति को दृष्टि में रखकर ईश्वर का नाम लेते हैं-प्रथम तो अपनी कमी की अनुभूति, दूसरी इस बात की भी अनुभूति कि प्रभु में उस कमी को पूरा करने का सामर्थ्य है।

इस वेदमन्त्र में प्रभु को 'वरुण' कहकर पुकारा। प्रभु में तो वरुणत्व के अतिरिक्त सहस्रों गुण हैं, परन्तु प्रार्थना के प्रसंग में केवल दो बातें मुख्य हैं-पहली तो अपनी अल्पज्ञता अथवा अज्ञानता के कारण अपनी उच्छृङ्खलता अर्थात् कर्त्तव्य को न करना, अकर्त्तव्य को कर बैठना अथवा किसी काम को यथेष्ट रीति से न करना, दूसरी, ईश्वर की अटल व्यवस्था पर विश्वास। वरुण का अर्थ है सम्यग् व्यवस्था करने वाला। जैसे राज में पुलिस के जाल बिछे रहते हैं जिनसे निकलकर भागने में कोई अपराधी सफल नहीं हो पाता, इसी प्रकार वरुणदेव के शासन के जाल बिछे हुए हैं जिनसे कोई अपराधी या पापी भाग नहीं सकता। **क्रमशः..**

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

यहाँ विदुर जी स्पष्ट कर रहे हैं कि दुर्योधनादि मूर्ख हैं, विवेकशून्य हैं, इनका साथ उसी प्रकार छोड़ देना चाहिये जिस प्रकार तिनकों से ढके हुए कुंए को व्यक्ति छोड़ देता है।

प्रश्न 31. विद्वान् मनुष्य कैसे व्यक्तियों के साथ मित्रता न करे?

उत्तर-विद्वान् व्यक्ति को चाहिए कि वह–

(1) अहंकारी व्यक्ति के साथ मित्रता न करे।

(2) पापाचरण में लिप्त व्यक्ति के साथ मित्रता न करे।

(3) मूर्खों से मित्रता न करे।

(4) क्रोधी से मित्रता न करे।

(5) विवेकशून्य व्यक्ति से मित्रता न करे।

(6) दु:साहसी (भयंकर साहस करने वाले) व्यक्ति से मित्रता न करे।

(7) धर्महीन पुरुषों के साथ मित्रता न करे।

यहाँ विदुर जी दुर्योधनादि के अवगुणों की चर्चा कर रहे हैं कि उपयुक्त अवगुण दुर्योधनादि में हैं। धृतराष्ट्र जी को ऐसे व्यक्ति का साथ नहीं देना चाहिये।

प्रश्न 32. कौन-सा मित्र अभीष्ट=चाहने योग्य होता है? कैसे व्यक्ति को मित्र बनाना चाहिये?

उत्तर-(1) जो कृतज्ञ (किए हुए का उपकार मानने वाला) हो।

(2) धार्मिक हो। (3) सच्चा हो।

(4) उदार हो। (5) स्थिर प्रीति वाला हो।

(6) संयमी हो। (7) मर्यादा में स्थित हो।

(8) आपत्ति में भी मित्रता का त्याग करने वाला न हो।

ऐसा व्यक्ति मित्र बनने योग्य है अर्थात् ऐसे गुणों से युक्त मित्र की चाहना करनी चाहिए।

प्रश्न 33. विषयों की निवृत्ति और प्रवृत्ति से क्या लाभ-हानि है?

उत्तर-इन्द्रियों की विषयों से निवृत्ति मृत्यु को जीतने से भी कठिन है और विषयों में अत्यधिक प्रवृत्ति तो देवों का भी नाश कर देती है।

यहाँ भाव यह है कि इन्द्रियों का जय होना कठिन है परन्तु असम्भव नहीं है। और विषयों में अधिक प्रवृत्ति जब देवों का भी नाश कर सकती हैं तो हम साधारण जनों का क्या सामर्थ्य है। अत: हमें विषयों में अत्यधिक प्रवृत्ति से अपने आपको बचाना चाहिये, इसी में हमारा हित है।

विदुर जी स्पष्टरूप से धृतराष्ट्र को संकेत कर रहे हैं कि तुम्हारे पुत्र अत्यधिक विषयों में प्रवृत्त हैं, जबकि अत्यधिक विषयों में प्रवृत्ति देवों का भी नाश कर देती है। वहाँ साधारण जन कैसे संभल सकते हैं अत: अपने पुत्रों को अत्यधिक विषय प्रवृत्ति से रोकने में ही भलाई है।

प्रश्न 34. कौन-कौन से गुण आयु को बढ़ाने वाले हैं?

उत्तर-विद्वान् लोग कहते हैं कि–

(1) जो सब प्राणियों के प्रति कोमल व्यवहार रखते हैं।

(2) जो गुणों में दोषों को नहीं देखते।

(3) जो सहनशील हैं।

(4) जो धैर्यवान् हैं।

(5) जो मित्रों का अपमान नहीं करता।

ऐसे गुण रखने वाले पुरुष की आयु बढ़ती है।

यहाँ विदुर जी धृतराष्ट्र को को यह समझा रहे हैं कि तुम्हारे पुत्र दुर्योधनादि सब प्राणियों के प्रति कोमल व्यवहार नहीं रखते, वे पाण्डवों के गुणों में भी दोषों को देखते रहते हैं, वे सहनशील बिल्कुल नहीं हैं, उनमें धैर्य नामक गुण का अभाव है, वे मित्रों का अपमान करते रहते हैं। अत: वे अल्पायु होंगे–ऐसी चेतावनी दी गई है।

क्रमश: अगले अंक में...

वैदिक संस्कृति व संस्कारों को आज के युग में बचाने की प्रमुख चुनौती

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

उन्नीसवीं शताब्दी में वैदिक संस्कृति को बचाने के लिये भारत के जिन महापुरुषों ने जन्म लिया उनके प्रमुख महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हुये थे। उन्होंने वैदिक धर्म विरुद्ध जो भारत की जनता में संस्कार व संस्कृति प्रचलित थी उन सभी चुनौतियों को स्वीकार करके रणक्षेत्र में कूद पड़े थे। वे समय के दास बनकर नहीं आये थे। समय को अपना दास बनाने के लिये आये थे। उन्होंने वैदिक संस्कृति का प्रचार करके भारतवासियों की विचारधारा को ही बदल डाला।

उन्होंने कहा जिन संस्कारों व मान्यताओं के कारण परिवारों में शिष्टाचार पितृभक्ति व उच्च आदर्श संस्कार व आत्म-शान्ति समाप्त हो रही हो और जिसके कारण विदेशी पाश्चात्य विकृत संस्कृति हमारे परिवारों में घुसकर चूल्हे तक पहुँच गयी हो और परिवारों के सदस्यों के खून के कण-कण में समा रही हो उसको बचाना बुद्धी जीविकों का प्रथम कार्य है।

भारतवर्ष में सदियों से सुप्त पड़ी चेतना अव्यक्त से व्यक्त की तरफ-उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य व अन्त में भारत की संस्कृति में एक नया मोड़ आया था। सदियों से सोई पड़ी यह चेतना जब भारत में अंगड़ाई लेकर आँखें खोलने लगी थी तब 1772 में बंगाल में राजाराम मोहन राय और 1834 में रामकृष्ण परमहंस और 1824 में महर्षि दयानन्द सरस्वती और 1893 में मद्रास में थियोसोफिकल सोसाईटी और 1884 में महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज ने और मुसलमानों में चेतना जगाने हेतु सर सैयद अहमद ने जन्म लिया। इसी काल के आस-पास स्वामी विवेकानन्द ने जन्म लिया। ये सब भारत की विभूतियाँ थीं, जो इस देश के नव निर्माण का सपना लेकर गंगा और हिमालय की देश भूमि का सदियों का संकट काटने हेतु प्रकट हुई थी।

आज असली समस्या अपनी संस्कृति को पुनर्जीवित करने की है-आज अधिकांश रूप में वैदिक संस्कृति के मूल अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, वर्ण व्यवस्था, सोलह-संस्कार, अपरिग्रह, निष्कामता, त्याग, तपस्या, ईश्वर, जीवात्मा, भोग, त्याग, इहलोक, परलोक, आज से शब्द आंशिक रूप में खोखले हो चुके हैं, इन शब्दों के व्यवहार को पुनः जीवन भरना मूल समस्या है। भारत में जितनी भी अध्यात्मिक सांस्कृतिक संस्थाएं हैं, उनको वैदिक संस्कृति व संस्कारों को प्राचीन भारतीय वैदिक सभ्यता पर एक रूपता से लाना होगा। तभी संसार की कोई संस्कृति भारतीय वैदिक संस्कृति टक्कर में नहीं टिक सकेगी।

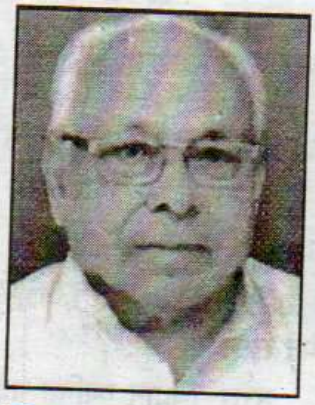

आज जिसको हम अपनी संस्कृति समझ रहे हैं-आज हम संस्कृति का अर्थ नाचना, गाना, अन्ध-परम्पराओं में चलना और चलाना गाना बजाना और सांस्कृति मण्डलों को विद्वेष में भेजना समझ रहे हैं, वह वैदिक संस्कृति को छुपा रहे हैं। नाचने गाने से भारतीय संस्कृति का उद्धार नहीं हो सकता है आज वेदों के अखण्ड स्रोत, उपनिषद् और दर्शन ग्रन्थों के स्वर कहीं न कहीं आधुनिक व पाश्चात्य संस्कृति में डूबते जा रहे हैं। धार्मिक अनार्ष व सामाजिक कुरीतियां व राजनैतिक साम्यवाद की विकृत संस्कृति बलवती हो गयी है।

मुसलमानों और अंग्रेजों के शासन काल में भी हमारी संस्कृति जीवित रही-इस्लाम के सामने दुनिया की अन्य संस्कृतियों ने सिर झुका लिया था, परन्तु भारतीय संस्कृति इस्लाम से टक्कर लेती रही इसको बचाने के लिये उत्तर भारत के सिक्खों के गुरुओं ने और दक्षिण भारत में शिवाजी ने लोहा लेना शुरू किया। मुसलमानों का आठ सौ वर्षों का काल निकल गया पर भारतीय संस्कृति ने गर्दन नहीं झुकाई। परन्तु अंग्रेजों की भारत में आने की प्रक्रिया भिन्न रही। अंग्रेज अपने साथ अपनी संस्कृति भी साथ लाये थे किन्तु वह सौदागर बनकर आये थे। अंगेजों की संस्कृति मुसलमानों की संस्कृति से बलवती थी। मुस्लिम संस्कृति

धर्म पर आधारित थी और अंग्रेजों की नहीं थी वह भौतिक व सांसारिक थी। दोनों संस्कृतियों की जब टक्कर हुई तो भारतीय संस्कृति के अंजर-पंजर ढीले हो गये। किन्तु भारतीय संस्कृति नष्ट होने पर भी जीवित रही वही संस्कृति अंग्रेजों के चले जाने पर आज जक एक शव के रूप में भी पड़ी है। आज हम संस्कृति का नाम भर लेते हैं। सच्चाई यह है कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद हमारी बची-खुची वैदिक आस्था भी उठ गई है।

हमारी वैदिक संस्कृति को युवा वर्ग क्यों उपेक्षित करते हैं-क्या हमारी संस्कृति में कोई कमी है जो युवा वर्ग उपेक्षा करता है, किन्तु कमी होते हुये भी हमारी संस्कृति जीवित है। फर्क है तो पाश्चात्य संस्कृति ने व भारत में एक वैदिक धर्म न होने से हजारों मत मतान्तरो के चलन से युवा वर्ग में चारित्रिक वैदिक आध्यात्मिक कमी आ रही है और आज के युग में युवा वर्ग को भटकने का कारण वैदिक संस्कार व शिक्षा की कमी है। आज हमें योगगुरु रामदेव बाबा जी से कुछ उम्मीद जगी है व ब्रह्मचारियों को तैयार करके वैदिक शिक्षा से दुनिया में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने एक टी.वी. चैनल वैदिक चैनल खोलकर बड़ा कार्य किया है व आस्था पर नित्य योग के साथ-साथ वेदों का प्रचार भी कर रहे हैं। सच्चे रूप में परोक्ष व अपरोक्ष रूप से वह भारतीय संस्कृति व संस्कारों को जीवन दे रहे हैं।

मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के काल से ही वैदिक संस्कृति में विकृति प्रारम्भ-श्रीराम के काल से ही भारतीय संस्कृति में अनाचार प्रारम्भ हो गया था, उदाहरणतह-मनु महाराज के सात पुत्र थे जिसकी एक शाखा में भागीरथ, अंशुमान, दलीप, रघु आदि हुये, दूसरी शाखा में सत्यवादी हरिशचन्द्र आदि हुये। वैवस्वत मनु के पश्चात् सूर्यवंश की 39 पीढ़ियां बीत जाने पर श्रीराम अयोध्या में जन्म लेते हैं। श्रीराम के काल में तीन संस्कृतियां स्पष्ट देखी जाती है। एक आर्य संस्कृति, दूसरी वानर संस्कृति, तीसरी राक्षस संस्कृति। प्रारम्भ में एक ही वंश था बाद में काल चक्र में रहन-सहन में परिवर्तन आता गया विभिन्न संस्कृतियां फैल गयी, पर तीनों ही वैदिक संस्कृति को मानते थे। तीनों के प्रमुख केन्द्र थे, आर्य संस्कृति का केन्द्र अयोध्या, वानर संस्कृति का केन्द्र किष्किन्धा और राक्षस संस्कृति का केन्द्र लंका था। वानर अयोध्यावासियों की तरह थे। वानर का अर्थ बन्दर नहीं, अपितु वन में रहने वाला था और राक्षस भी मनुष्य की तरह थे और आर्य लोग तपस्या व वैदिक मर्यादा पर चलते थे और राक्षस लोग खावों पीयो मौज से रहो स्वेच्छाचारी थे। वानर और आर्य एक तरफ थे और राक्षस दूसरी ओर थे। कालान्तर में राक्षस संस्कृति महाभारत काल तक चरम पर थी और आज भी दिनों-दिन राक्षस संस्कृति का विस्तार हो रहा है। अन्तर क्रियाशैली व व्यवहार बदल गये है। राक्षस संस्कृति को रोकना बुद्धिजीवियों के लिये एक भयंकर चुनौती बन गयी है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आर्यसमाज को चुनौती-आर्यसमाज अपने जन्म काल के 148 वर्षों से वैदिक संस्कृति को बचाये हुये है केवल जीवित रखा हुआ है विस्तार सामान्य रूप से हुआ। चारों ओर अवैदिक मतों की गुरुओं की बाढ़ आयी हुई है। आज आर्यसमाज की आवाज नक्कार खाने में तूती की आवाज हो रखी है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश के युवाओं का ध्यान संस्कृति से हटकर भ्रष्ट राजनीति के तरफ चला गया है। हर कोई मेम्बर सैकेट्री, मंत्री बनना चाहता है। हम राजनीति का विरोध नहीं कर रहे है किन्तु वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित आदर्श राजनीति की आशा करते हैं। जब संस्कृति का अर्थ शक्ति प्राप्त करना हो जाता है तब राजनीति का अर्थ भ्रष्टाचार हो जाता है। जब तक राजनीति में उच्च संस्कार, संस्कृति व सभ्यता नहीं आ जाती तब तक वह अशान्ति का सूचक ही बनेगी।

आर्यसमाज के नेतृत्व को व भारत के धर्माचार्यों के राष्ट्रवादियों को व आदर्श वैदिक संस्कृति की पोषक वेत्ताओं को मिलकर संयुक्त रूप से ईश्वरीय सिद्धान्त व वेदों की शिक्षानुसार जो सर्व सुखकारी है मिलकर व्यापक रूप से पाश्चात्य, संस्कृति के सामने वैदिक संस्कृति व संस्कारों व सभ्यता की बड़ी लकीर खीचनी होगी तभी हमारी वैदिक संस्कृति जीवित रह सकेगी।

संम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

लवजेहाद, कश्मीर व केरल स्टोरी

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

आज लवजेहाद का उग्र रूप ले रहा है। समाज को इस ओर गम्भीरता से ध्यान देना होगा। भरे बाजारों में बेटियों की हरण हो जाती है। मुम्बई में श्रद्धा जिसके 35 टुकड़े दिल्ली लाकर स्थान-स्थान पर डाले गए वह व्यक्ति मुस्लिम था नाम था आफताब। आफताब ने श्रद्धा के पैंतीस टुकड़े किए थे। निकिता तोमर बल्लभगढ़ हरयाणा में लवजेहाद में घसीटने का असफल प्रयास करते हत्या कर दी गई। दिल्ली की साक्षी की चाकू से गोदकर तथा पत्थर मार-मारकर मुस्लिम युवक ने हत्या कर दी। ऐसी अनेक घटनाएँ लवजेहादियों द्वारा की जा चुकी हैं। आज भी मोबाइल व इंटरनेट पर ऐसे वीडियो देखने में आ रहे हैं, जिनमें ऐसे मुस्लिम नवयुवक होते हैं, जो हिन्दुओं का छद्म नाम रखकर हाथ में कलावा बांधकर भोली-भाली लड़कियों को भौतिकवाद की धन-दौलत व प्रमादयुक्त जीवन का लालच देकर भ्रम में डालकर बहका व फुसला रहे हैं। आज हिन्दुओं में उनके परिवारों में लवजेहाद जैसी घटनाओं से सावधान रहने हेतु जाग्रत करने की आवश्यकता है। केरला स्टोरी चलचित्र में केरल से भगाई युवतियों का दृश्य तो जीता-जागता परिचय है ही। लाखों कश्मीरी पण्डितों का पलायन किसे याद नहीं है। विचार करने का गम्भीर विषय है।

केरला कश्मीर बंगाल स्टोरी (फाइलें) नई बात नहीं है। तुर्क, पठान, मंगोल आदि यवन तथा बाहर से आए आक्रमणकारी लुटेरों व बलात्कारियों ने यहाँ बार-बार हत्या काण्ड कर अस्मिता को लूटा है। मो० बिन कासिम, इल्तुमिश, बाबर, तैमूर लंग, गौरी, गजनवी आदि यही तो करते थे। बलात्कार व लूट-पाट करने ही तो आते थे। इतिहास उठाकर देखें तो पता चलेगा इन भूखे दरिन्दों ने कितना भयानक खेल रक्तपात का यहाँ खेला था, कल्पना नहीं कर सकते।

इस्लाम का उदय सातवीं सदी के आरम्भ में हुआ। अरबों ने मिस्र, फ्रांस, उत्तरी अफ्रीका पर विजय प्राप्त की। सन् 712 में मो० बिन कासिम ने भारत के सिन्ध पर आक्रमण किया था। उसने जो बर्बर अमानवीय अत्याचार किये यहाँ शब्दों में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। आक्रमणों व दरिन्दगी का एक लम्बा इतिहास है।

विदेशी लुटेरे दरिन्दे व पिशाच जैसा कि सोचते थे। दुनिया पर फतेह कर ली हो परन्तु भारत से पिटकर ही गये। भारत के वीर योद्धराओं ने उन्हें रोंदा, मारा व जमीन तक में गाड़ दिया था। अरबों की हार का वर्णन उन्हीं की किताब फुतुहुल्वल्दान में दिया है। अरबों की बुरी तरह से हुई हार का इस किताब में वर्णन है।

जिन अरबों ने विश्वभर के देशों में हाहाकार मचा रखा था। भारत में पैर रखने पर नागभट्ट तथा उनके सामन्तों तथा योद्धाओं ने दौड़ा-दौड़ाकर मारा था। सिन्ध जिसे मो० बिन कासिम ने जीता था नागभट्ट व बप्पा रावल ने पुनः जीत लिया था। अरब सेनापति जो बर्बर व दुर्दान्त था, इस आक्रमण में भाग निकला था, घावों से पीड़ित रात ही में मर गया था। अरब सेना भाग गई। हाहाकार मच गया। नागभट्ट की राजधानी कन्नौज थी व उनका शासनकाल ई० 730 से ई० 756 रहा है। बप्पा रावल चित्तौड़ के शासक थे। अरबों को धूल चटाने के लिए यह प्रसिद्ध योद्धा थे। मक्का में इस्लाम लागू होने के बाद अरबों ने दुनिया में खूनी खेल खेलना आरम्भ कर दिया था। योद्धाओं ने उन्हें कभी सफल नहीं होने दिया। छत्राणियों ने जौहर किए। कई बार शाके भी हुए। बप्पा रावल नागभट्ट प्रथम व द्वितीय योद्धा तक्षक से लेकर महाराणा प्रताप अमरसिंह ने इन आसुरी कुकृत्यों, आक्रमणकारियों पर विजय प्राप्त की।

आज लवजेहाद जैसी जेहादी घटनाएँ उसी का रूप हैं, परन्तु यह भारत है, जहाँ आर्यों ने मातृभूमि के लिए अपनी आहुतियाँ दी हैं। इस्लाम फैलाने की योजना भारत में पूरी नहीं हो सकती।

शेष पृष्ठ 16 पर....

गीता ही नहीं वेदों का भी प्रचार करो! धर्मगुरु विचार करें...

❑ महावीर 'धीर' शास्त्री, प्रेमनगर, रोहतक-9466565162

इंडोनेशिया में जो गीता गाई जाती है, उसमें केवल 70 श्लोक ही हैं। भारत में पंडितों ने जोड़-जोड़ कर 700 श्लोकों की गीता बना डाली। महाभारत में व्यास जी ने 8500 श्लोक बनाए थे, लेकिन जोड़-जोड़कर आज एक लाख से ऊपर श्लोक बना दिए गए हैं।

श्रीकृष्ण जी ने युद्ध के मैदान में कोई श्लोक नहीं गाए थे। उन्होंने तो साधारण भाषा में मोहग्रस्त अर्जुन को क्षत्रिय धर्म की याद दिलाई थी और अपना कर्म करने के लिए प्रेरित किया था। ये बातचीत विश्वयुद्ध के समय 5-7 मिनट से अधिक समय की संभव नहीं थी, लेकिन नए-नए श्लोक रचकर यह कई घंटे की बना दी गई है। गीता को इतना प्रसिद्ध करके इन पंडितों ने भगवान् की वाणी, संसार के सर्वप्रथम ग्रन्थ जो की पूरे के पूरे संस्कृत की कविताओं (मंत्रों) में हैं, सभी ऋषि-मुनियों और महापुरुषों ने वेदों को सर्वज्ञान के भंडार माना है। उनको बिल्कुल भुला दिया है। पंडितों ने वेदों को छोड़कर पुराण रच दिए जिनमें सत्य कम और असत्य तथा भ्रमजाल अधिक है। पुराणों के रचयिता सब के लिए समान वैदिक धर्म को नष्ट करने के उत्तरदायी हैं।

हमारे से समझदार तो सूरीनाम के भाई हैं, जिनके राष्ट्रपति ने पिछले वर्ष गीता की शपथ न लेकर वेदों की शपथ लेकर राष्ट्रपति पद ग्रहण किया। राष्ट्रपति जी ने राष्ट्रपति भवन में वैदिक पुस्तकालय स्थापित किया है, जहां आकर कोई भी वेद-शास्त्रों का अध्ययन कर सकता है।

श्रीकृष्ण वेदों के विद्वान् थे। गोपालक थे। अखाड़े में उतरते थे। अस्त्र-शस्त्र के अभ्यासी थे। आज की अधूरी मन्दिर संस्कृति ने जनता को नपुंसक बना दिया है। हमारे प्रत्येक महापुरुष शुद्ध शाकाहारी, बलवान् और विद्वान् थे। हम उनके गुणों को धारण नहीं करते। उनकी मूर्तियां बनाकर उन्हें नहलाते, तिलक लगाते, खिलाते, पिलाते, सुलाते और जगाते हैं, उन पर मच्छरदानी, कूलर, हीटर लगाते हैं बस। मंदिरों में वैदिक साहित्य और भारतीय इतिहास के पुस्तकालय, अखाड़े, यज्ञशाला स्थापित हों। वेदों के विद्वान् पुरोहित नियुक्त होने चाहिएं। विद्वान् पुरोहित जनता की सोच अच्छी कर सकते हैं, जिससे अपराध और भ्रष्टाचार घट सकते हैं।

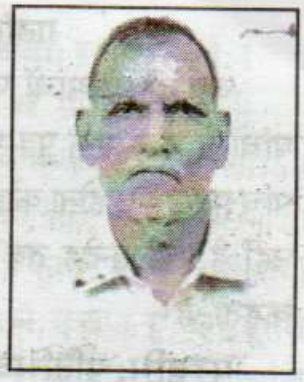

धार्मिक संगठन मंदिरों में सुधार करें-कर्नाटक का उडूपी मठ कोटि गीता लेखन अभियान 12 जून 2023 से कुरुक्षेत्र की भूमि से आरम्भ कर रहा है। इस अभियान में 10 देशों के प्रतिनिधि पहुंच रहे हैं। अभियान का उद्देश्य विश्वभर में गीता का प्रचार-प्रसार करना है। आस्ट्रेलिया की सरकार इस अभियान में उडूपी मठ का विशेष सहयोग कर रही है। यह अच्छी बात है। सरकार फ्रांस, बहरीन, अमेरिका और अबूधाबी में मंदिर निर्माण करवा रही है। भारत में राममंदिर तो बनाया ही जा रहा है। भारत के लगभग प्रत्येक गांव और नगर में कई-कई मंदिर बने हुए हैं। सभी जगह नए-नए मंदिरों का निर्माण भी हो रहा है। मंदिरों का उद्देश्य मानव को सच्चा मानव बनाना होता है। गली-गली में मंदिर स्थापित हैं, लेकिन मानव तो मानव न रहकर दानव बनता जा रहा है। युवा माता-पिता को मारकर घरों से भागकर विवाह रचा रहे हैं। नशे के लिए माता-पिता को मार रहे हैं। अबोध कन्याओं और युवतियों को क्रूरता से भी आगे बढ़कर बीभत्स तरीके से मारा जा रहा है।

मंदिरों में प्राय: व्यक्ति विभिन्न प्रकार की मनोकामना पूर्ति के लिए जा रहे हैं। पंडितजन मंदिरों में और घरों तक में जाकर अलग-अलग मनोकामना पूर्ति के पाठ करके लोगों का भयंकर शोषण कर रहे हैं। मानव निर्माण की कोई प्रक्रिया तो मंदिरों में कहीं दिखाई नहीं पड़ रही है।

समाज उत्थान में मंदिरों की कोई भूमिका दिखाई नहीं दे रही है। धर्म को धंधा बनाकर भारी अधर्म किया जा रहा है। सच्चे वैदिक धर्म का पतन हो चुका है। जिसे हिन्दू धर्म कहा जा रहा है उसका कोई आधार ही नहीं है। कोई नियम

शेष पृष्ठ 16 पर....

क्या महाभारत में मन्त्र हैं?

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

गतांक से आगे....

जब द्रौपदी पांचों पाण्डवों की पत्नी बना दी गई तो पांचों से एक-एक पुत्र भी उत्पन्न करवा दिया। द्रौपदी के पांच पुत्र उत्पन्न होना कोई असम्भव या आश्चर्यजनक बात नहीं है, पर सन्देह तब होता है जब द्रौपदी श्रीकृष्ण से कहती है-

पञ्चभिः पतिभिर्जाताः कुमारा मे महौजसः।
एतेषामप्यवेक्षार्थं त्रातव्यास्मि जनार्दन॥
प्रतिविन्ध्यो युधिष्ठिरात् सुतसोमो वृकोदरात्।
अर्जुनाच्छ्रुतकीर्तिश्च शतानीकस्तु नाकुलिः॥
कनिष्ठाच्छ्रुतकर्मा च सर्वे सत्यपराक्रमाः।
प्रद्युम्नो यादृशः कृष्ण तादृशास्ते महारथाः॥

(वन० 12/72-74)

"जनार्दन! इन पांच पतियों से उत्पन्न हुए मेरे महाबली पांच पुत्र हैं, उनकी देखभाल के लिए भी मेरी रक्षा (पाण्डवों द्वारा) आवश्यक थी। युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य, भीमसेन से सुतसोम, अर्जुन से श्रुतकीर्ति, नकुल से शतानीक और छोटे पाण्डव सहदेव से श्रुतकर्मा का जन्म हुआ है। ये सभी कुमार सच्चे पराक्रमी हैं। श्रीकृष्ण! आपका पुत्र प्रद्युम्न जैसा शूरवीर है, वैसे ही वे मेरे महारथी पुत्र भी हैं।"

महाभारत आदिपर्व 185-17 के अनुसार द्रौपदी स्वयंवर के समय श्रीकृष्ण अपने पुत्र प्रद्युम्न और पौत्र अनिरुद्ध सहित वहां उपस्थित थे। तब से लेकर वे निरन्तर पाण्डवों के सम्पर्क में रहे। खाण्डव वन जलाने, सभा भवन बनवाने, जरासंध को मारने व राजसूय यज्ञ करने तक श्रीकृष्ण उनके साथ रहे। अपने प्रगाढ़ सम्बन्ध के कारण ही वे पाण्डवों से मिलने वन में गये। तो क्या उन्हें इतना भी नहीं पता था कि उनकी मुंहबोली बहन (सखी) द्रौपदी के पांचों पाण्डवों से पांच पुत्र हुए हैं, जो अब उनके भानजे अभिमन्यु की तरह पराक्रमी हो चुके हैं? यद्यपि महाभारत में द्रौपदी के पांच पुत्रों का वर्णन अनेक बार आया है, पर वह ऐसा मिलता है मानो वे पांच न होकर एक ही हों-द्रौपदेयाः। युद्ध में उनके सर्वत्र इकट्ठे रहकर ही लड़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी माँ ही एक नहीं है, पिता भी एक ही है। यथा-

ततस्ते भ्रातरः पञ्च राक्षसेन्द्रं महाहवे।
विव्यधुर्निशितैर्बाणैस्तपनीय विभूषितैः॥

(भीष्म० 100-42)

"तदनन्तर उन पांचों भाइयों ने उस महासमर में स्वर्णभूषित तीक्ष्ण बाणों द्वारा राक्षसराज अलम्बुष को क्षत-विक्षत कर दिया।"

द्रौपदेयान् महेष्वासान् सौमदत्तिर्महायशाः।
एकैकं पञ्चभिर्विद्ध्वा पुनर्विव्याध सप्तभिः॥

"राजन्! महायशस्वी शल ने महाधनुर्धर द्रौपदी पुत्रों में से एक-एक को पांच-पांच बाणों से बींधकर पुनः सात-सात बाणों द्वारा घायल कर दिया।" फिर पांचों ने मिलकर उसे मार दिया। (द्रौणपर्व 108-1)। युद्ध के अन्त में जब अश्वत्थामा ने रात्रि में आक्रमण कर उनका वध किया, तब भी वे इकट्ठे ही थे। यह वर्णन द्रौपदी के पांचों पुत्रों को युधिष्ठिर के ही सिद्ध करता है। पर पांचों के पांच पुत्रों की कल्पना ने शेष भाइयों की अपनी पत्नी (हिडिम्बा व सुभद्रा को छोड़कर) और पुत्रों (घटोत्कच, अभिमन्यु व इरावान को छोड़कर) को गौण कर दिया। युधिष्ठिर की पत्नी देविका पुत्र यौधेय, भीम की बलन्धरा पुत्र सर्वग, नकुल की करेणुमती पुत्र निरमित्र, सहदेव की विजय पुत्र सुहोत्र का वर्णन केवल एक बार आदिपर्व अध्याय 85वें में आया है। वनपर्व (23-50) में करेणुमती की चर्चा छोड़कर उनका जन्म-मरण सब गायब है। द्रौपदी के पुत्र राजसूय यज्ञ में आये अतिथि राजाओं को विदा करने जाते हैं, वन में मिलने जाते हैं, अभिमन्यु के विवाह में उपप्लब्य नगर जाते हैं, युद्ध करते हैं व वीरगति पाते हैं। पर यौधेय, सर्वग आदि का कहीं कोई वर्णन नहीं है।

एक सम्भावना यह भी लगती है कि सुतसोम, श्रुतकीर्ति आदि भीम अर्जुन आदि के पुत्र हों, पर द्रौपदी के नहीं।

द्रौपदी को पांचों की पत्नी की कहानी बनाने वालों ने इन्हें द्रौपदी के पुत्र बना दिया हो अथवा ये काल्पनिक हो सकते हैं, क्योंकि महाभारत सभापर्व अध्याय 71वें के अनुसार द्रौपदी ने केवल युधिष्ठिर के पुत्र प्रतिविन्ध्य के भविष्य की चिन्ता की थी न कि कथित पांच की। पाण्डवों के जुए में हारने के बाद धृतराष्ट्र ने द्रौपदी को कुछ मांगने के लिए कहा, तो उसने कहा था–

ददासि चेद् वरं मह्यं वृणोमि भरतर्षभः।
सर्वधर्मानुगः श्रीमानदासोऽस्तु युधिष्ठिरः॥
मनस्विनमजानन्तो मैवं ब्रूयुः कुमारका।
एष वै दासपुत्रो हि प्रतिविन्ध्यं ममात्मजम्॥
राजपुत्रः पुरा भूत्वा यथा नान्यः पुमान् क्वचित्।
राजभिर्लालितस्यास्य न युक्ता दासपुत्रता॥

(28,29,30)

''भरतवंश शिरोमणे! यदि आप मुझे वर देते हैं तो मैं यही मांगती हूँ कि सम्पूर्ण धर्म का आचरण करने वाले राजा युधिष्ठिर दासभाव से मुक्त हो जाएँ जिससे मेरे मनस्वी पुत्र प्रतिविन्ध्य को अज्ञानवश दूसरे राजकुमार ऐसा न कह सकें कि यह 'दासपुत्र' है। जैसे पहले राजकुमार होकर फिर कोई मनुष्य कभी दासपुत्र नहीं हुआ है, उसी प्रकार राजाओं के द्वारा जिसका लालन-पालन हुआ है, उस मेरे पुत्र प्रतिविन्ध्य का दासपुत्र होना कदापि उचित नहीं है।''

यहाँ स्पष्ट है कि पहले वरदान में द्रौपदी ने केवल युधिष्ठिर व दासभाव छूटना मांगा था, ताकि उन दोनों का पुत्र प्रतिविन्ध्य 'दासपुत्र' न कहलाए। यहाँ द्रौपदी ने केवल प्रतिविन्ध्य का नाम लिया है, सुतसोम आदि का नहीं। यदि द्रौपदी के अन्य भीम आदि से भी सुतसोम आदि पुत्र हुए होते, तो अकेले युधिष्ठिर की मुक्ति से यह सम्भव न था। शेष चार भाइयों की मुक्ति उसने दूसरे वरदान में मांगी है, उनके साथ 'दासपुत्र' वाली बात भी नहीं कही है। इससे सिद्ध होता है कि द्रौपदी युधिष्ठिर की ही महारानी थी और उसका एकमात्र पुत्र प्रतिविन्ध्य था। भीम के कथन से भी यही सिद्ध होता है।

जब पाण्डवों को वन में गए हुए कुछ समय हुआ था, तो द्रौपदी ने कौरवों के प्रति युधिष्ठिर के क्रोध को भड़काने का प्रयास किया, पर युधिष्ठिर शान्त रहे। इस पर भीम ने भी दुःखी व क्रोधित होकर युधिष्ठिर को युद्ध के लिए उत्साहित करते हुए कहा–

सर्वे ते प्रियमिच्छन्ति बान्धवाः सह सृञ्जयैः।
अहमेकश्च संतप्तो माता च प्रतिविन्ध्यतः॥

(वन०अ० 35, श्लोक 15)

''आपके सभी बन्धु-बान्धव और सृंजयवंशी योद्धा भी आपका प्रिय करना चाहते हैं। केवल हम दो व्यक्तियों को ही विशेष कष्ट है। एक तो मैं सन्तप्त हूँ और दूसरी प्रतिविन्ध्य की माता द्रौपदी।'' यहां द्रौपदी को केवल प्रतिविन्ध्य की माता कहा है, तथाकथित पांच की नहीं और प्रतिविन्ध्य युधिष्ठिर का पुत्र था।

सम्भव है पांचों पाण्डवों के साथ द्रौपदी की (वनवास आदि में) विशेष सहभागिता देखकर उसे पांचों की पत्नी मानने की कल्पना की गई हो, पर ऐसे लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि महाभारत में राजा की रानी का ही विशेष वर्णन मिलता है, अन्य स्त्रियों का नहीं। यदि भीम आदि की पत्नियों का गौण वर्णन है तो दुर्योधन आदि कौरवों की पत्नियों और पुत्रों का वर्णन भी न के बराबर है।

प्रबुद्ध पाठकों को इस बिन्दु पर भी विचार करना चाहिए कि उलोपी से उत्पन्न हुए अपने पुत्र इरावान का वध (भीष्म, 96) होने पर अर्जुन इतने दुःखी हुए थे कि वे जाति भाइयों के साथ लड़े जा रहे महाभारत युद्ध की निन्दा करने लगे थे और सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु के वध से तो वे इतने शोक में डूब गये थे कि उस पाप के मुख्य भागी जयद्रथ को अगले दिन सूर्यास्त से पूर्व ही मारने की प्रतिज्ञा भी कर ली थी। पर सौप्तिक पर्व (अ०8,10,11) में अश्वत्थामा द्वारा रात में मारे गए पुत्र (द्रौपदी पुत्र श्रुतकीर्ति) के शोक में अर्जुन का वैसा स्वर सुनाई नहीं दिया। केवल युधिष्ठिर व द्रौपदी ही विलाप करते रहे। सम्भवतः उन्हीं का पुत्र प्रतिविन्ध्य ही मारा गया था और (तथाकथित) अन्य चार नहीं।

क्रमशः अगले अंक में....

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क–01262-216222, मो० 08901387993

मानव जीवन मिलना ईश्वर की हम पर सबसे बड़ी कृपा

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो० 9412985121

हमें मनुष्य का जीवन मिला हुआ है। इस जीवन को प्राप्त करने में हमारे माता-पिता का योगदान निर्विवाद है, परन्तु इसके साथ ही हमारी आत्मा और शरीर का सम्बन्ध कराने वाला सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान् परमात्मा है। यदि परमात्मा न होता तो न तो यह सृष्टि अस्तित्व में आती और न ही इस सृष्टि में प्राणी जगत् का अस्तित्व होता। परमात्मा इस सृष्टि का निमित्त कारण है और उसने ही अपनी सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता से अनादि, नित्य, अमर तथा नाशरहित जीवात्माओं को उनके पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों का सुख व दुःखरूपी फल देने के लिये ही इस संसार की रचना की है और वही इसका पालन व संचालन कर रहे हैं। सृष्टि का उपादान कारण जड़ प्रकृति है जो प्रलयावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म व सत्व, रज एवं तम गुणों वाली होती है। हम सभी मनुष्यों को ईश्वर को जानना है और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करना है जिससे हम अपने जीवन में दुःखों से बचे रहें और मृत्यु के बाद हमे मोक्ष प्राप्त हो सके। यदि हम मोक्ष की अर्हता पूरी न कर सकें तब भी हमें श्रेष्ठ मनुष्यों की देवयोनि में जन्म मिले जहां रहते हुए हम पुनः मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करें और उसे प्राप्त कर लें। जन्म व मृत्यु की पहेली को समझने के लिये सभी मनुष्यों को ऋषि दयानन्दकृत 'सत्यार्थप्रकाश' आदि समस्त ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश में अनेक विषयों पर जो विस्तृत ज्ञान है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है और यदि कुछ है भी, तो उसके लिये जिज्ञासु बन्धुओं को अनेक संस्कृत के वैदिक ग्रन्थों को पढ़ना होगा। सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व यह है कि प्रायः सभी इष्ट विषयों का ज्ञान इस ग्रन्थ को पढ़कर 4-5 दिनों में ही हमें प्राप्त हो जाता है जिसमें सृष्टि व ईश्वर-जीवात्मा विषयक प्रायः सभी रहस्य सम्मिलित हैं। इसी कारण वेद मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने कहा था कि उन्होंने अपने जीवन में लगभग 18 बार ऋषि दयानन्द रचित 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ पढ़ा। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि सत्यार्थप्रकाश पढ़ने के लिये उन्हें अपनी समस्त भौतिक सम्पत्ति बेचनी पड़ती तब भी वह सहर्ष इस पुस्तक को प्राप्त करते। सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व वर्णनातीत है। इसकी महत्ता एवं उपयोगिता को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

संसार में तीन अनादि, अमर तथा नित्य सत्तायें ईश्वर, जीव और प्रकृति हैं। हम जीव हैं और हमारी ही तरह अनन्त जीवात्मायें इस ब्रह्माण्ड में हैं। हम जीवात्मा हैं और हमारा शरीर पंचभौतिक पदार्थों के संयोग से बना है। यह संयोग ईश्वर के बनाये नियमों व व्यवस्था के द्वारा होता है। जिसकी उत्पत्ति होती है उसका विनाश भी होता है और जिसकी उत्पत्ति नहीं हुई उसका विनाश कभी नहीं होता। इसी कारण हमारा शरीर नाशवान अर्थात् मरणधर्मा है जबकि हमारी आत्मा अनादि, नित्य, अविनाशी और अमर है। हमारे इस शरीर के जन्म से पूर्व भी आत्मा का अस्तित्व था। हमारे इस शरीर के मृत्यु को प्राप्त होने पर भी हमारी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। ईश्वर अजन्मा है और इसके विपरीत जीवात्मा जन्म-मरण धर्मा है। इस जन्म से पूर्व भी हम अर्थात् हमारी जीवात्मा अपने पूर्वजन्म में उस जन्म के भी पहले के जन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार किसी प्राणी योनि में इस ब्रह्माण्ड में कहीं इस पृथिवी के अनुरूप ग्रह पर जीवन व्यतीत कर रहे थे और ऐसा ही हमारे इस वर्तमान जीवन की मृत्यु के बाद भी होगा। परमात्मा की हम पर कृपा होने से वह हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार जन्म देता है और कर्मों के अनुसार ही हमारी जाति (मनुष्य, पशु वा पक्षी आदि), आयु और भोग (सुख व दुःख) निश्चित होते हैं। यदि परमात्मा व प्रकृति में से, दोनों अथवा कोई एक या दोनों ही, न होते तो हमारा जन्म व मरण नहीं हो सकता था और न ही हम किसी प्रकार के सुख व दुःखों का भोग कर सकते थे। हममें से कोई प्राणी दुःख नहीं चाहता, सभी प्राणी सुख, शान्ति व सुरक्षा चाहते हैं। सुखों का आधार शुभ व

श्रेष्ठ कर्म हैं। अत: हमें अशुभ व पाप कर्मों को करना छोड़ना होगा। यदि हम पाप कर्मों को करना पूर्णत: छोड़ देंगे तो हमें दु:ख प्राप्त नहीं होंगे और हम सुखपूर्वक इस जीवन को व्यतीत कर अगले जन्म में भी सुखी व श्रेष्ठ मानव जीवन प्राप्त कर देवकोटि की मनुष्य योनि में जन्म लेकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

परमात्मा ने हमारे मार्गदर्शन व कर्त्तव्यों की प्रेरणा करने के लिये ही सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे पूर्वज ऋषियों व विद्वानों ने वेद व इसके सत्य अर्थों की रक्षा की और इस कल्प में हमारी आत्मा लगभग 1.96 अरब वर्षों की यात्रा करते हुए वर्तमान जीवन तक पहुंचे हैं। इस रहस्य का ज्ञान कराने में महर्षि दयानन्द जी का बहुत बड़ा योगदान है। हम सब उनके ऋणी हैं। उन्हीं के कारण हम अपने इस जीवन में वेद, सत्यासत्य कर्मों के स्वरूप सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष तथा इसकी प्राप्ति के उपाय ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र व सदाचरण आदि को जान सके हैं। हमें सुख व प्रसन्नता आदि जो भी अनुभूतियां प्राप्त होती हैं वह सब ईश्वर हमें हमारे ज्ञान एवं कर्मों के अनुरूप प्रदान करते हैं। हमें सदैव स्वयं को ईश्वर का ऋणी व कृतज्ञ अनुभव करना है और वेदाध्ययन सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों एवं अन्य विपुल वैदिक साहित्य का अध्ययन करते रहकर सन्मार्ग का अनुगमन करना है।

यदि हम हम अपने कर्मों को देखें तो हम पाते हैं कि अपने एक-एक कर्म का ज्ञान रखना कितना कठिन है। हम स्वयं ही अपने अतीत के अनेक कर्मों को भूल जाते हैं। ईश्वर हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के किसी कर्म को नहीं भूलता। ईश्वर का यह गुण हमें उसके प्रति समर्पित होकर उपासना करने के लिये प्रेरित करता है। हमने कुछ दिन पहले फेसबुक पर एक मन्त्र व उसके मन्त्रार्थ को पढ़ा जिसमें कहा गया है कि हम दिन में कितनी बार पलक झपकते और कितनी बार आंखे खोलते हैं, इसका पूरा-पूरा हिसाब परमात्मा को पता होता है। हमारे छोटे, बड़े सभी कर्मों, चाहें वह दिन के प्रकाश में किये गये हों या रात्रि के अन्धेरे में अथवा सबसे छुपकर किये गये हों, परमात्मा उन सभी कर्मों को यथावत् जानता है और समयानुसार उनका फल कर्म करने वाले कर्ता को देता है। ईश्वर का यह गुण हमारे भीतर रोमांच उत्पन्न करता है। इसी कारण हमारे सभी विद्वान्, योगी व ऋषि न तो स्वयं कभी कोई अशुभ व पाप कर्म करते थे और न ही किसी अन्य को करने की प्रेरणा करते थे। हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने व इसके लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये ऋषि दयानन्द के अनेक विद्वानों द्वारा लिखे गये जीवन चरितों सहित स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं० लेखराम आर्यमुसाफिर, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों की जीवनियों व आत्मकथाओं को पढ़ना चाहिये। इससे हमें सत्कर्मों को करने की प्रेरणा मिलने के साथ असत्य के त्याग करने का बल भी प्राप्त होगा। हम ईश्वर की कृपा को इस रूप में भी अनुभव करते हैं कि जब सन् 1825 के दिनों में सारा देश अज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान से भ्रमित व अन्धविश्वासों व कुपरम्पराओं से ग्रस्त था, तब उस परमात्मा ने कृपा करके तत्कालीन व भावी सन्ततियों के लिये वेदज्ञान से परिपूर्ण ऋषि दयानन्द को इस देश में भेजा था, जिन्होंने स्थान-स्थान पर जाकर वेदों का प्रचार कर अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर किया था। ऋषि दयानन्द ने जड़-मूर्ति पूजा की निरर्थकता से हमारा परिचय कराया था और फलित ज्योतिष की निर्मूलता व निरर्थकता से भी हमें सावधान रहने के लिये कहा था। अवतारवाद को उन्होंने अवैदिक व असत्य कल्पना करार दिया था और मृतक श्राद्ध को उन्होंने तर्क व युक्ति से असिद्ध घोषित किया था।

उन्होंने स्त्री व शूद्रों सहित मनुष्यमात्र को वेदाध्ययन का अधिकार दिया और आर्यसमाज गठित करके आर्यसमाज के 10 स्वर्णिम नियम हमें दिये थे। ऋषि दयानन्द ने हमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि एक दर्जन से अधिक ग्रन्थ दिये जिन्हें पढ़कर हम अपने जीवन को ऊंचा उठा सकने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। उनकी कृपा से ही आज हम व लाखों लोग असत्य मत व मार्ग को त्याग कर सत्य व कल्याण-पथ को ग्रहण कर सके हैं। इस जीवन में हमें वेद सहित ऋषि दयानन्द और प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थ 6 दर्शन, 11 उपनिषद्, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत सहित वैदिक विद्वानों के शताधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के अध्ययन

शेष पृष्ठ 15 पर....

महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत समाज-सुधार के विविध सोपान

❑ डॉ० वर्षा भाटी, द्वारिका विहार, हरिद्वार

स्वामी दयानन्द का पूरा जन्म समाज-सुधार तथा जनकल्याण के लिए ही था, जब उनको अन्तिम बार विष दिया गया तब वे इन सामाजिक कार्यों से अवकाश प्राप्त न थे। दयानन्द का जन्म ही समाज-सुधार के लिए हुआ था। उनकी शिक्षा, उनका व्यक्तित्व तथा जो उपलब्धियाँ हैं तथा जहाँ-जहाँ दयानन्द गये, शास्त्रार्थ किया, लोगों का अन्धकार दूर किया। से सब समाज-सुधार के अंग हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार हेतु अपनी उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा को स्थापित किया। आर्यसमाज का अर्थ ही आर्य-श्रेष्ठ है अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज जो दयानन्द के बाद भी दयानन्द के वैदिक दर्शन को समाज हित के लिए जीवित बनाये रखेंगे। सामाजिक हित को ध्यान में रखते हुए स्वामी दयानन्द ने समाजोत्थान के लिए आर्यसमाज नामक संस्था की स्थापना की और उनका संविधान बनाया तथा उसे भारत के अनेक स्थलों पर स्थापित किया। जिसके दस नियम समाज सुधार के दस स्तम्भ हैं-

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

स्वामी दयानन्द के अनुसार 10 नियमों का पालन यदि व्यक्ति करता है तो समाज का सुधार स्वयमेव ही हो जाता है। इन नियमों में धर्म, पंथ कहीं भी आड़े नहीं आ रहा है। ये नियम विश्वकल्याण के अर्थ में हैं, कोई विशेष समाज के लिए नहीं हैं, अपितु मानवमात्र के लिए हैं। इनका पालन प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। ये सारी मानव जाति के लिए हैं। ये 10 नियम सार्वभौम और सार्वकालिक हैं।

स्वामी दयानन्द के कतिपय कार्य ऐसे हैं जो सर्वप्रथम रहे हैं। समाज सुधार के लिए प्रमुख अंग हैं, जिनके सही होने पर समाज का सुधार हो सकता है। ऐसे सम्पूर्ण अंगों पर स्वामी जी ने बड़ा प्रयास किया है। इस सुधार में सबसे प्रथम शर्त यह है कि समाज का सुधार मनुष्य के सुधार से ही संभव है। मनुष्य का सुधार उत्तम शिक्षा एवं उत्तम आचरण के बिना नहीं हो सकता। उत्तम शिक्षा व आचरण प्राप्त करने के लिए दयानन्द ने वेदों की ओर लौटने का मार्ग प्रशस्त किया। यदि वेदों का अर्थ सत्य होगा तब ही शिक्षा का महत्त्व है। असत्य अर्थ से शिक्षा कुशिक्षा बन जाएगी। इसलिए समाज सुधार के निमित्त महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम यह कार्य किये-

वेदों का सही भाष्य-स्वामी दयानन्द जी ने जो वेदों के भाष्य देखे वे पूर्णरूप से गलत किए गये थे। सबसे पहले स्वामी जी ने वेदों के भाष्य को यौगिक दृष्टि द्वारा सही-सही अर्थ समाज के सामने प्रस्तुत किया।

मानवता की उत्तमता-स्वामी दयानन्द ने पुरुषों, स्त्रियों एवं शूद्रों को शिक्षा एवं वेदों के पढ़ने के अधिकारों का सतर्क प्रमाण दिया। वह समाज में सबको उत्तम ज्ञान से

युक्त करा सुदृढ़ समाज का निर्माण कराना चाहते थे। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि ''लड़कों और लड़कियों को बोलने, सुनने, चलने, बैठने, उठने खाने, पीने, पढ़ने, विचारने तथा पदार्थों का जानने और जोड़ने आदि की शिक्षा भी करनी चाहिए। जो वेदों को अर्थसहित यथावत् पढ़के शुभ गुणों का ग्रहण और उत्तम कर्मों को करता है, वही सबसे उत्तम होता है।''

स्वस्थ परिवार का निर्माण-समाज की सुदृढ़ व्यवस्था के साथ परिवार की स्वस्थ प्रणाली पर स्वामी दयानन्द ने बल दिया। परिवार समाज की इकाई है और वह परस्पर मेलयुक्त हों।

भाषा-सुधार-स्वामी दयानन्द ने हिन्दी भाषा के सुधार के लिए जो प्रयत्न किये वे सर्वविदित हैं। उन्होंने आर्यसमाजी सदस्यों के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य कर दिया था। जितना हिन्दी भाषा का उपकार दयानन्द ने किया उतना आज तक कोई न कर सका।

यज्ञों पर बल-स्वामी दयानन्द वेदानुकूल आचरण की चर्चा करते हैं। यज्ञों की अनिवार्यता स्वामी जी ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए बताई है। इसका धार्मिक कारण से कोई लेना-देना नहीं है। इसके पीछे स्वामी जी का तर्क है कि इतना प्रदूषण जो जल, वायु, पृथिवी, पर अधिक से अधिक फैल रहा है, यह मनुष्यों को भी रोगी बनायेगा, इसलिए शुद्ध पदार्थों को घी के साथ अग्नि में डालने से प्रदूषण नहीं होगा तथा वर्षा भी अच्छी होगी। वर्षा से ही सृष्टि की खुशहाली है, यह एक वैज्ञानिक पर्याय है।

स्वाधीनता एवं स्वदेशी प्रयोग-स्वामी जी ने विदेशी राज्य से अपना स्वतन्त्र राज्य अच्छा माना है। विदेशी राज्य माता-पिता के समान हितकारी ही क्यों न हो परन्तु स्वाधीनता सुखप्रद है। इसलिए स्वामी जी ने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए भरसक प्रयास किया तथा देश के नागरिकों को स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की जानकारी दी। जिससे घरेलू उद्योगों को सहायता मिलेगी और राष्ट्र मजबूत होगा।

आर्थिक सुधार-स्वामी दयानन्द जी ने आर्थिक सुधार के काफी प्रयास किये। इनका 'गोकरुणानिधि ग्रन्थ' पूरा आर्थिक सुधार को लेकर है। इसमें गाय की सुरक्षा और उसका पालन आर्थिक स्थिति मजबूत कर समाज को स्वावलम्बी बनाता है। खेती की विद्या को जानना, अन्न की रक्षा, खाद, भूमि की परीक्षा, जोतना, बोना यह सब अर्थ व्यवस्था को नियमित करने के साधन हैं। छोटे-छोटे लघु उद्योगों द्वारा समाज की स्थिति को ऊँचा उठाने के उपाय बताए हैं। किसान को राजाओं का राजा कहा है।

राजनीतिक सुधार-स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ समुल्लास में राजनीतिक सुधारों का वर्णन किया है। जिसमें उन्होंने राजधर्म, तीन सभा, दण्डधर्म, राजा के व्यसन, राज्य के अधिकार, प्रबन्ध सुरक्षा, सन्धि, व्यूह आदि राजनीतिक व्यवस्थाओं की चर्चा की है। दयानन्द ने लोकतंत्र प्रणाली की व्यवस्था बताई है। एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा को सभापति तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे। उक्त सुधार का कितना सुन्दर प्रस्तुतीकरण दयानन्द ने किया है।

जाति-भेद कर्मानुसार-दयानन्द ने मनुष्यों में केवल मनुष्य जाति मानी है अन्य नहीं। अपने-अपने गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर व्यक्ति की गणना होती है।

पाखण्ड का खण्डन-स्वामी दयानन्द ने जितना साहस तत्कालीन युग में दिखाया वह अद्वितीय था। जिस समय भारत की स्थिति अत्यन्त दयनीय तो थी लेकिन इन पाखण्डियों का जाल ऐसा बिछा हुआ था कि कोई इनके विरुद्ध खड़े होने की हिम्मत नहीं जुटा पाता था। दयानन्द ने पाखण्ड-खण्डिनी पताका लहराकर इन पाखण्डियों के गृह में ही इनको पछाड़ा। सामाजिक कुरीतियों का खण्डन कर दयानन्द ने बड़ा उपकार इस राष्ट्र का किया।

अछूतोद्धार-दयानन्द ने अछूत समझे जाने वालों को शुद्धता से रहने का पाठ पढ़ाया। उनके लिए शिक्षा की बात की। उन्हें वेद पढ़ने का अधिकारी बताया तथा वे चाहें तो अपने गुणों के आधार पर आगे बढ़ सकते हैं।

स्त्री उत्थान-स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र उत्थान के साथ-साथ स्त्रियों की दुःखजन्य स्थिति की चिन्ता की। उन्हें शिक्षा की ओर उन्मुख किया, विधवा विवाह का अर्थ समझाया, बाल-विवाह के लिए रोक लगाई। स्त्री को आगे लाने के लिए बार-बार गार्गी, मैत्रेयी के उदाहरण दिए।

शेष पृष्ठ 15 पर....

स्वयं अपने बच्चों के दुश्मन न बनें

थोड़ी देर पहले दो बच्चों को आपस मे लड़ते हुए देखा। उम्र दोनों की 3 साल के करीब, लड़ते-लड़ते एक बच्चे ने जुबानी हमला बोलते हुए तुतलाती-सी जुबान में कहा कि गोली से मार दूंगा, तो दूसरे ने कहा कि टैंक से मार दूंगा। दोनों को देखकर घरवाले हंस रहे थे, लेकिन अगर कुछ दशक पहले की बात करें तो बच्चे लड़ते तो थे, लेकिन अब हथियारों की बातें करने लगे हैं। अब बच्चे अभिमन्यु तो हैं नहीं जो माँ के पेट से ही सब सीख जाएं। वे अपने आसपास जैसा देखते हैं, बच्चों का व्यवहार वैसा ही बनता चला जाता है। आजकल टीवी सीरियलों से लेकर समाचार चैनलों व फिल्मों और हद तो तब हो जाती है जब कार्टूनों में भी लड़ाई झगड़ा, हथियार व अन्य हिंसक विजुअल्स बच्चे देखते हैं और फिर उनकी नकल करते हुए। उसी प्रकार का व्यवहार बच्चों का होता चला जाता है। एक अमेरिकी रिपोर्ट के अनुसार टीवी पर 140 के करीब हिंसक सीन 1 दिन में बच्चे देख लेते हैं। बची हुई कसर हमारा लाड़-प्यार वाला सिस्टम पूरा कर देता है। बच्चे मिट्टी के घर बनाने व मिट्टी में खेलने की बजाए गेम, पंजाबी गाने जिनमें भाषा ऐसी की जो शराब व नशों से शुरू होकर हथियार तक पहुंच जाती है। बल्यू व्हेल जैसे गेम्स के जरिए जाने कितने ही बच्चे अपनी जिन्दगी की गेम ही ओवर कर बैठे। हम कौन होते हैं बच्चों के हँसते खेलते बचपन को ग्रहण लगाने वाले, परिस्थितियां बेहद विकट हो चली हैं। बच्चे मोबाइल को ऐसे चलाने लगे हैं। मानो मोबाइल का आविष्कार उन्होंने ही किया हो। मोबाइल की लत ऐसी की छुड़ाने से भी न छुटे। आखिर देश के कर्णधारों को क्या दे रहे हैं हम। जिन बच्चों का बचपन खेलकूद में बीतता था। अब उनका अधिकतर समय टीवी और मोबाइल पर बीतने लगा है। अब बच्चों को जन्म से ही चश्में चढ़ने लगे हैं। मानसिक रूप से उलझन उनके बचपन को खा रही है। गलती बच्चों की नहीं है बल्कि गलती तो अभिभावकों की है। जिनके पास बच्चों को सही गलत सिखाने तक का समय नहीं है। अभिभावकों का अधिकतर समय कागज के नोट कमाने में बीत रहा है लेकिन कागज के नोटों से बच्चों का व्यवहार व भविष्य नहीं सुधारा जा सकता। दिन प्रतिदिन बाल अपराधों की घटनायें हमें डराती तो हैं ही साथ ही जगाती भी है कि जाग जाओ नहीं तो आज के बच्चों का भविष्य अंधकारमय होने के जिम्मेदार हम खुद होंगे। हम अपने लाड प्यार से खुद उन्हें गर्त में धकेल रहे हैं। वर्तमान समय में बच्चों को चरित्र निर्माण, वैदिक शिक्षा एवं महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं को जीवन में आत्मसात करने की बेहद जरूरत है क्योंकि उसी से बच्चे बाल्यावस्था में ही अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे और सुदृढ़ समाज व सशक्त देश निर्माण के लिए कार्य करेंगे।

–प्रदीप दलाल, स्वतंत्र पत्रकार एवं डायरेक्टर प्रेस एंड आईटी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने मिनर्वा पब्लिक स्कूल कैलरम, कैथल में आयोजित आर्य वीर दल शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और हवन कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में युवापीढ़ी को अधिक से अधिक संख्या में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा आयोजित आर्य वीर दल शिविर में हिस्सा लेकर शारीरिक रूप से मजबूती के साथ-साथ महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं और वैदिक ज्ञान को अपने जीवन में आत्मसात् करने के लिए इन आयोजनों में प्रतिभागिता करनी चाहिए। इस अवसर पर सुनील आर्य, रोबिन आर्य, शुभम आर्य, मनीराम आर्य, अनिल आर्य व स्कूल प्रिंसिपल रामदिया आर्य उपस्थित रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत..

पृष्ठ 13 का शेष..

वेदों का मार्ग बताया। उसे पुरुष के समकक्ष सिद्ध किया। वेदों से यह प्रमाणित कर दिया कि स्त्री पुरुष से अधिक सम्माननीय है। वह वे सब अधिकार रखती हैं जो एक पुरुष को प्राप्त हैं। वे भारत की स्वाधीनता के साथ स्त्री स्वाधीनता की भी मांग करते थे। दयानन्द स्त्री शिक्षा को समाज सुधार की पहली अवस्था मानते थे। स्वामी दयानन्द ने समाज सुधार के क्रम में कृषि, पशु नस्ल सुधार से लेकर स्वराज्य एवं शासनाध्यक्ष कैसा हो? तथा धर्म का स्वरूप क्या है तथा कैसा होना चाहिए? उक्त प्रत्येक विषय पर कार्य किया है। पाखण्ड के खण्डन के लिए उन्होंने सहस्त्रों व्यक्तियों के बीच अकेले निर्भीक होकर कई जगह शास्त्रार्थ किए, जिनमें उन्हें कई बार ईंट, पत्थर आदि का भी सामना करना पड़ा, किन्तु यह समाज-सुधार का कार्य नहीं छोड़ा।

इतना ही नहीं देशोपकारक कार्य के साथ उन्होंने मुक्ति जैसे कठिन विषय पर भी लोगों का मार्गदर्शन किया तथा योग और प्राणायाम का वर्णन सत्यार्थप्रकाश में कर मनुष्य को स्वस्थ रहकर देशसेवा करने के गुण भी सिखाये हैं और कहा स्वस्थ मनुष्य ही मुक्ति की कामना कर सकता है। स्वामी दयानन्द के सामाजिक सुधार के सोपान इतने अधिक हैं कि उनकी यहाँ विस्तार से चर्चा दुष्कर है। उसका तर्क सम्मत कारण यह है कि दयानन्द को पूरा विश्व एक समाज सुधारक के रूप में ही जानता है। उनका पूरा जीवन ही सामाजिक सुधार के लिए बलिदान हो गया। (साभार-आर्ष ज्योति)

आचार्य वेदमित्र जी (भऊ आर्यपुर, रोहतक) ने आर्य वीरांगना शिविर भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक में स्त्रीशिक्षा पर अपने वैदिक विचार रखे।

मानव जीवन मिलना ईश्वर..

पृष्ठ 11 का शेष..

का सुअवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हम अनुभव करते हैं कि यदि ऋषि दयानन्द जी न आये होते तो हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि हम वैदिक सनातन धर्म में बने रहते भी या नहीं? देश में धर्मान्तरण की जो आंधी विधर्मियों द्वारा चलाई गई थी उसे वेद प्रमाण, तर्क एवं युक्तियों से ऋषि दयानन्द और उनके बाद उनके अनुयायियों ने ही रोका था।

हमें यह सब कार्य ईश्वर के द्वारा प्रेरित प्रतीत होते हैं। यदि ईश्वर हमारे महापुरुषों को प्रेरणा व शक्ति न देते तो आज देश और विश्व का स्वरूप वह न होता जो आज है। इस कार्य के लिये ईश्वर एवं ऋषि दयानन्द का कोटिशः वन्दन करते हैं। हमें वेद, उपनिषद्, दर्शन एवं सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषिग्रन्थों का प्रचार कर वेदवाक्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाने के विचार वा आज्ञा को सार्थक करना है।

परमात्मा ने हमें मनुष्य जन्म देने सहित भारत भूमि और वह भी एक वैदिक धर्मी वा सनातन धर्मी परिवार में जन्म देकर हम पर जो उपकार किया है, हम उसका भी सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। भारत में जन्म लेकर हम ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से जुड़े हैं, यह भी ईश्वर की हम पर महती दया एवं कृपा है। हम सब आर्य भाई-बहिन इसके लिए ईश्वर के अतीव आभारी हैं। हम वैदिक साहित्य और वेद एवं ऋषियों की प्रेरणा के अनुरूप आचरणों से सदैव जुड़े रहें और ईश्वर की वेदाज्ञा का लोगों में प्रचार करते रहें, इसके लिये ईश्वर हमें शक्ति प्रदान करे।

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

-रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

गीता ही नहीं वेदों का भी..... पृष्ठ 7 का शेष.....

ही नहीं है। कहीं भी दो ईंट लगाई और पूजा होने लगती है। इन देवियों पर मक्खियां भिनभिनाती रहती हैं। कुत्ते इनके चढ़ावे को खाते रहते हैं और उस पर पेशाब भी करते रहते हैं। कोई देवी पर मिष्ठान्न चढा रहे हैं। कोई देवी पर बकरा काटकर चढ़ा रहे हैं। कोई शराब चढ़ा रहे हैं। कोई बच्चों की बली दे रहे हैं, ये सब हिन्दू हैं।

हमलावरों ने हिन्दू नाम से हमें संबोधित किया। आर्य नाम छोड़कर हमने उसे ही अपना लिया। भयावह अनाचार करके सैयद पूजवाए गए, जिन्हें हम आज भी पूज रहे हैं। पिचहत्तर साल की स्वतंत्रता के बाद भी हम अपने वैदिक धर्म को नहीं अपना पाए। इन हिन्दू कह जाने वाले लोगों ने वैदिक धर्म का पाठ पढ़ाने वाले विद्वानों को ही मार डाला। परतंत्रता के समय विधर्मी बने भाइयों को इन हिन्दू कहे जाने वाले भाइयों ने ही दोबारा अपने धर्म में नहीं आने दिया। अपने सच्चे इतिहास को समझकर हिन्दू शब्द को छोड़कर अपने को आर्य कहो और वैदिक धर्म को अपनाओ।

हमारी शिक्षा वैदिक हो, हमारी दीक्षा वैदिक हो, हमारा खान-पान वैदिक हो, परिधान वैदिक हो, ध्यान-उपासना वैदिक हो, संविधान वैदिक हो, समस्त जीवनचर्या वैदिक हो, प्रत्येक मंदिर को वैदिक आश्रम बना दिया जाए, तब मानव मानव बनेगा और देवता भी बनेगा। अपराध और भ्रष्टाचरण स्वत: समाप्त हो जाएंगे। आर्यावर्त भरतखंड की संतानो! बुद्धि से विचार कर कल्याण का मार्ग अपनाओ।

■ **चौधरी लखीराम आर्य की जयन्ती पर जूआं गुरुकुल सोनीपत में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने शिरकत की। इस दौरान उनका जोरदार स्वागत किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, कृषिमंत्री श्री जेपी दलाल, स्वामी नित्यानंद जी, स्वामी आदित्यवेश जी, अंतरंग सदस्य राममेहर आर्य, प्रधान रणदीप आर्य, सुरेंद्र नरवाल, विशाल आर्य व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।**

जवजैहाद, कश्मीर व..... पृष्ठ 6 का शेष.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदविरुद्ध मान्यताओं, अमानवीय धारणा, कुरीति, पाखण्ड, भारत में पनप रहे विभिन्न मत-मतान्तरों पर वैचारिक प्रहार शास्त्रार्थ, शास्त्रों सत्यार्थप्रकाश तथा वेदप्रचार द्वारा प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति का प्रचार कर किया है और आर्यसमाज के विद्वानों स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, महाशय राजपाल, पण्डित लेखराम, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल व भगतसिंह जैसे महान् क्रान्तिकारियों के अमर बलिदानों से इन आसुरी शक्तियों को कुचल दिया गया तथा भविष्य में आर्यों का चक्रसुदर्शनरूपी सत्यार्थप्रकाश तथा शास्त्रार्थरूपी वैचारिक क्रान्ति का शस्त्र अपना रुद्ररूप धारण करता रहेगा। संसार को श्रेष्ठ बनाना है। आसुरी शक्तियों को हटाना है। लवजेहाद का नाश समाज को जागृत करके सफलता पूर्वक किया जा सकता है। प्रमाण सामने है-उत्तराखण्ड में मार्गों पर अवैध मजारें बना दी गईं, आज वहाँ के निवासी संगठित होकर जेहादियों को भगा रहे हैं, जिससे बेटियों की सुरक्षा हो सके। जेहादियों की कुदृष्टि बहन-बेटियों पर ही रहती है। अत: संगठनात्मक एकता तथा जनजागृति आज आवश्यकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के यशस्वी प्रधान सेठ श्री राधाकृष्ण आर्य जी ने द्वितीय युवा चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर की भव्य समापन एवं दीक्षांत समारोह में शिरकत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि युवा चरित्र निर्माण वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है। इस अवसर पर अंतरंग सदस्य श्री राममेहर आर्य, श्री सुरेंद्र नरवाल एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पूर्व आईएएस अधिकारी एवं कमिश्नर के पद पर रहे श्री परमचंद बिढान जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी से उनके कैथल स्थित कार्यालय में मुलाकात करने पहुंचे। इस दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने उनको सम्मानित किया। इस दौरान कॉलेजियम सदस्य श्री सुरेंद्र अग्रवाल एवं शिक्षक श्री रोबिन सिंह उपस्थित रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य और गुरुकुल के प्रधान श्री राजकुमार आर्य ने श्री शुभम्, प्रदीप, महावीर एवं संजीव संरक्षक को सम्मानित किया एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

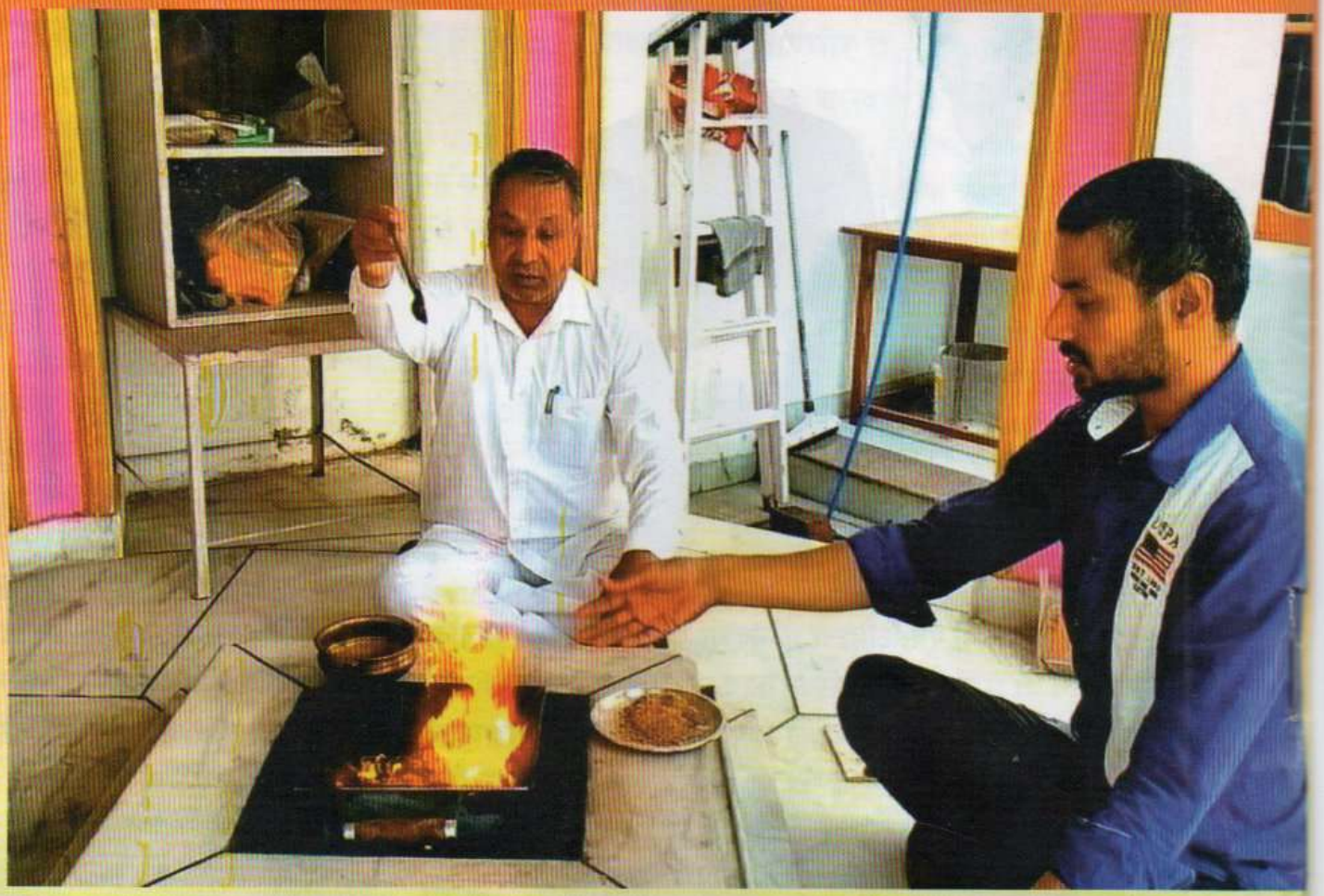

आज आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने अपने सुपुत्र श्री मानवेंद्र आर्य जी के साथ अपने अमरावती पंचकूला स्थित निवास-स्थान पर स्थापित महर्षि दयानंद सरस्वती यज्ञशाला में हवन कर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् पूरे विश्व के कल्याण की कामना परमपिता परमात्मा से की। यह संसार का सबसे बड़ा कर्म है और हमें नित्य हवन कर सभी के कल्याण की कामना करनी चाहिए।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री .....

पता .....

.....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा